2 कुरिंथियों

कुरिंथ शहर के सत्संग को राजदूत पौलुस का दूसरा पत्र

पुस्तक की कुछ ज़रूरी बातें

मुक्तिदाता येशु के राजदूत पौलुस ने 2 कुरिंथियों का यह पत्र 1 कुरिंथियों के पत्र के कुछ समय बाद लिखा। वह योजना बना रहा था कि कुरिंथ शहर के भक्तों के साथ मिलें। कुरिंथ सत्संग के कुछ लोग उनके सत्संग के चलाने के ढंग को चुनौती दे रहे थे और प्रभु येशु के मार्ग के विरोध में थे। पौलुस इस पत्र के माध्यम से अपने कठिन अनुभवों को बताया कि परमात्मा की शक्ति और शुभ संदेश परेशानियों और कमज़ोरियों में भी राह दिखाते हैं।

प्रार्थना - “हे परमात्मा, आपके राजदूत पौलुस को कुरिंथ शहर के सत्संग को ये दूसरा पत्र लिखने की प्रेरणा देने के लिए आपका धन्यवाद। यह आपकी कृपा है कि हम जब भी कठिनाइयों का अनुभव करते हैं तो आप हमें अद्‌भुत शांति देते हैं जिसके द्वारा हम दूसरों की मदद कर सकते हैं।”

• • • ■ • • •

1

[1]यह पत्र पौलुस की ओर से है, जिसे परमात्मा ने मुक्तिदाता येशु का
राजदूत बनने के लिए चुना है। हमारे भक्त भाई तिमोथियस ने भी इस
पत्र को लिखने में सहयोग दिया है।
मैं कुरिंथ शहर में परमात्मा के सत्संग और पूरे ग्रीस देश के आखेया
प्रदेश* में सभी पवित्र भक्तों को लिख रहा हूँ। [2]हमारे पिता परमात्मा
और मुक्तिदाता प्रभु येशु की ओर से तुम्हें कृपा और शांति प्राप्त हो।

घोर परेशानियों में परमात्मा की शांति और सुरक्षा

[3]हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु के पिता परमात्मा का गुणगान हो, जो
दयालु हैं और हर स्थिति में शांति देते हैं। [4]परमात्मा सब परेशानियों
में हमें शांति देते हैं जिससे हम भी वही शांति अनेक व्यक्तियों को दे
सकें जो परेशानियाँ और दुख सह रहे हैं। [5]मुक्तिदाता के मार्ग पर चलते
हुए हमें चाहे किसी भी परेशानी का सामना करना पड़े, परमात्मा हमें
मुक्तिदाता के द्वारा हमेशा शांति देंगे। [6]हम इस उम्मीद से परेशानियाँ
सहते हैं कि तुमको शांति और मुक्ति मिलेगी। क्योंकि हमें शांति मिली
है, तुम भी शांति पाओगे, जैसे तुम भी हमारी तरह सबर के साथ
परेशानियों को सहते हो। [7]हमें पूरा भरोसा है कि जैसे तुम परेशानियों में
हमारे साथ रहे, तुमको भी अपनी परेशानियों में परमात्मा से वैसी ही
शांति प्राप्त होगी जैसी हमें मिली थी।
[8]भक्त भाइयो और बहनो, हम यह चाहते हैं कि तुम उन परेशानियों
के बारे में जानो और समझो जो हमें आसिया प्रदेश में झेलनी पड़ी थीं।
उन परेशानियों का भार हमारी सहनशक्ति से कहीं अधिक था, यहाँ
तक कि हमें ज़िन्दा बचे रहने की भी आशा नहीं थी [9]और ऐसा लगता
था कि हम मर ही जाएँगे। इन सबसे हमने यह सीखा कि हमें अपने पर
नहीं, किंतु परमात्मा पर भरोसा रखना चाहिए, जो मरे हुए लोगों को
भी ज़िन्दा कर देते हैं। [10]परमात्मा ने हमें मौत के खतरे से बचाया, और
हमें यकीन है कि वह ऐसा बार-बार करेंगे। [11]और तुम लोग प्रार्थना
करके हमारी मदद कर रहे हो। जब परमात्मा तुम्हारी प्रार्थनाओं का

* **1:1** *आखेया प्रदेश* - आखेया प्रदेश वर्तमान दक्षिणी ग्रीस देश में एक बड़ा क्षेत्र है।

उत्तर देते हैं, और हमें सुरक्षा प्रदान करते हैं, तो बहुत लोग हमारे दयालु परमात्मा को धन्यवाद देते हैं।

परमात्मा ने हम पर अपनी मोहर लगाई है

12हमें अपने मन की सच्चाई पर गर्व है। हम हमेशा ईमानदारी और
सच्चाई से जीते हैं, खासकर जब हम तुम्हारे साथ हो। हम इस मार्ग पर
सांसारिक ज्ञान के सहारे से नहीं, बल्कि हमारे परमात्मा की अद्भुत
कृपा से चलते हैं। 13मैं ऐसा कुछ नहीं लिख रहा हूँ जिसे तुम पढ़ और
समझ नहीं सकते। मुझे आशा है कि तुम इसे पूरी तरह से समझोगे,
14और मुझे लगता है कि तुम इसे समझने भी लगे हो। यदि ऐसा है, तो
जिस दिन हमारे प्रभु येशु पृथ्वी पर वापस आएँगे तो जो तुमने किया है
उस पर हमारी तरह उन्हें भी गर्व होगा।

15-16मुझे यकीन था कि तुम जानते हो कि मैंने मैसेडोनिया क्षेत्र जाते
समय तुमसे मिलने की योजना बनाई थी और मैसेडोनिया से लौटते
समय भी तुमसे दोबारा मिलने की योजना बनाई थी। तब तुम मेरी
यहूदिया प्रदेश जाने में मदद कर सकते हो। 17तुम सोच रहे होगे कि मैंने
अपनी योजना क्यों बदली। क्या तुमको लगता है कि मैं अपनी योजनाएँ
लापरवाही से बनाता हूँ? क्या तुमको लगता है कि मैं उन सांसारिक
लोगों की तरह हूँ जो “हाँ” कहते हैं, जबकि उनका मतलब “नहीं” होता
है? 18जिस प्रकार परमात्मा भरोसेमंद हैं, उसी प्रकार जब हम “हाँ” कहते
हैं तो उसका मतलब “न” नहीं होता, 19मुक्तिदाता येशु, परमात्मा के पुत्र,
भी भरोसेमंद हैं। सिलवानुस, तिमोथियस, और मैंने तुमको प्रचार किया है
कि कैसे प्रभु येशु अपने वादों के प्रति सच्चे हैं और जो वह कहते हैं, वह
करते हैं। 20मुक्तिदाता उन सभी वादों को पूरा करेंगे जो परमात्मा ने किए
हैं, और हम उनके द्वारा “सत्य परमात्मा की जय” कहकर परमात्मा का
गुणगान करते हैं। 21परमात्मा हमारा अभिषेक करके मुक्तिदाता के साथ
मज़बूती से खड़े होने में तुम्हारी और हमारी मदद करते हैं, 22और अपनी
पवित्र आत्मा की मुहर हमारे दिलों पर लगाकर यही साबित करते हैं कि
वह भविष्य में हमारे लिए क्या करेंगे।

23परमात्मा मेरे गवाह हैं कि मैंने कुरिंथ शहर न आने का फैसला
इसलिए किया कि मैं तुमको डांटना-फटकारना नहीं चाहता था। 24हम

तुम्हें कोई हुक्म नहीं देना चाहते हैं कि तुम अपना भक्ति का जीवन कैसे बिताओ। हम तुम्हारे साथ मिलकर काम करना चाहते हैं, ताकि तुम खुशी से भरे रहो। तुम्हारी आस्था तुम्हें मज़बूत बनाएगी।

2

पौलुस का सत्संगियों से अद्‌भुत लगाव

1मैंने मन में पक्का किया है कि मैं तुम्हें पहली बार की तरह
डांटने-फटकारने के लिए तुम्हारे यहाँ दूसरी बार नहीं आऊँगा,
2क्योंकि यदि मैं तुम्हें दुख दूँ तो मुझे सुख देने के लिए कौन
बचेगा? वही न जिसे मैंने दुखी किया है। 3मैंने तुम्हें एक बहुत
कड़ी फटकार वाला पत्र लिखा, ताकि तुम अपना व्यवहार ठीक
करो और जब मैं तुमसे मिलने आऊँ तो दुखी न हो। निश्चित रूप
से तुम सभी जानते हो कि मेरी खुशी तुम सब के खुश रहने में ही
है। 4मैंने ऐसा पत्र बड़ी पीड़ा में, अशांत मन और आँसुओं के साथ
लिखा था। मैं तुम्हें दुखी नहीं करना चाहता था, लेकिन मैं इन
शिक्षाओं के द्वारा यह दिखाना चाहता हूँ कि मैं तुमसे कितना प्रेम
करता हूँ।

माफ करना ज़रूरी है

5मैं इसे बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बता रहा हूँ कि जब मैं कहता हूँ कि
जिस आदमी ने सारी परेशानी पैदा की, उसने मुझे चोट पहुँचाने
से ज़्यादा आप सभी को चोट पहुँचाई। 6तुम में से ज़्यादातर लोगों
ने उसका विरोध किया, और तुम्हारा यह विरोध उसकी सज़ा
के लिए काफी था। 7अब उसे दिल से माफ करके उसको शांति
दो, कहीं ऐसा न हो वह निराशा में डूब जाए। 8इसलिए मेरी तुमसे
विनती है कि उसे बताओ कि तुम उससे पहले के समान ही प्रेम
करते हो।

9उस पहले पत्र को मैंने इसलिए भी लिखा था कि तुम्हें परख कर देखूँ
कि तुम मेरी आज्ञा को मानते हो या नहीं। 10यदि तुम किसी को किसी
बात के लिए माफ करते हो, तो मैं भी उसे माफ करता हूँ। जिसको
भी माफ करने की ज़रूरत थी, मुक्तिदाता को उपस्थित जानकर मैंने

उसे माफ कर दिया है। [11]अगर हम माफ नहीं करते* हैं तो शैतान हमारे जीवन में परेशानियाँ पैदा कर देगा। हम शैतान की चालों को अच्छी तरह जानते हैं।

परमात्मा के लिए उनके भक्त खुशबू के समान हैं

[12]जब मैं त्रोआस शहर आया तब प्रभु ने मुझे मुक्तिदाता के शुभ संदेश
का प्रचार करने का एक सुंदर अवसर दिया। [13]परंतु मेरा मन परेशान
रहा, क्योंकि मुझे मेरा भक्त भाई तीतुस त्रोआस में नहीं मिला। इसलिए मैं वहाँ से निकल गया और मैसेडोनिया प्रदेश की ओर चल दिया।
[14]मैं आभारी हूँ कि परमात्मा हमेशा मुक्तिदाता के द्वारा हमें विजय के मार्ग की ओर ले जाना संभव बनाते हैं। परमात्मा हमें हर जगह मुक्तिदाता का ज्ञान फैलाने में मदद करते हैं, और यह ज्ञान इत्र की
खुशबू की तरह है। [15-16]परमात्मा हम में मुक्तिदाता की खुशबू डालते हैं जो लोगों को उस मुक्ति और मोक्ष की ओर आकर्षित करती है जो वह प्रदान करते हैं। लेकिन जो पापों में डूबे हैं, उनके लिए वह खुशबू एक बदबू है जो उन्हें नाश की और ले जा रही है। परमात्मा की सहायता के बिना किसमें इतनी योग्यता है कि मुक्तिदाता के ज्ञान को इस तरह
फैलाए? [17]बहुत से लोग परमात्मा के संदेश का प्रचार करके अमीर बनने की कोशिश करते हैं। लेकिन हम परमात्मा को अपना गवाह मानकर ईमानदारी से और मुक्तिदाता के अधिकार के साथ परमात्मा के संदेश का प्रचार करते हैं।

3

परमात्मा ही भक्तों की योग्यता का आधार हैं

[1]क्या हम एक बार फिर अपनी बड़ाई करने लगे? दूसरों को हमारे बारे में बताने के लिए क्या हमें तुमको या तुमसे पत्रों की ज़रूरत है? कुछ लोगों को उनके बारे में बताने के लिए पत्रों की ज़रूरत होती है।
[2]परंतु हमारे पत्र तो तुम स्वयं हो, हमारे दिल पर लिखे हुए पत्र, जिन्हें

---

* **2:11** *अगर हम माफ नहीं करते* - सीधेतौर पर नहीं लिखा गया है, पर सन्दर्भ से इसका अर्थ समझा जा सकता है (देखें पद 10)।

सब पढ़ते और पहचानते हैं। [3]साफतौर पर तुम मुक्तिदाता की ओर से
एक पत्र हो जो तुम्हारे बीच हमारी सेवा के परिणाम को दिखाता है।
लेकिन तुम कलम और स्याही से या पत्थर की बनी तख्तियों पर नहीं
लिखे गए हो। तुम्हारे जीवित परमात्मा की आत्मा द्वारा हमारे दिलों पर
नक्काशी की गयी है।
[4]हम ये बातें इसलिए कहते हैं क्योंकि हमें विश्वास है कि मुक्तिदाता
के माध्यम से परमात्मा ने ऐसा कर दिया है। [5]हमें यह दावा करने का
अधिकार नहीं है कि हमने अपने दम पर कुछ किया है। हमारी हर
प्रकार की योग्यता का आधार परमात्मा ही हैं। [6]परमात्मा ने हमें नए
अनुबंध का सेवक बनने योग्य बनाया है। इस अनुबंध का आधार
मोशे के लिखित नियम और शिक्षा नहीं है बल्कि परमात्मा की पवित्र
आत्मा है। नियम मौत का कारण बनते हैं, लेकिन पवित्र आत्मा मोक्ष
देती है।

नए अनुबंध का गौरव

[7]मोशे के नियम और शिक्षा का पालन न करना मृत्यु का कारण बना।
ये नियम पत्थर की तख्तियों पर खोदे गए थे। परमात्मा ने इन नियमों
को अपने प्रवक्ता मोशे को इस अद्भुत तरह से दिए कि परमात्मा का
तेज मोशे के चेहरे पर झलकने लगा। उस तेज को देखकर लोगों की
आंखें चौंधिया गईं। लेकिन वह तेज थोड़े समय बाद चला गया। [8]तो
निश्चित रूप से वह नया मार्ग जो परमात्मा की पवित्र आत्मा देती है,
और भी अधिक तेज से भर जाएगा! [9]यदि मृत्युदंड देने वाले मोशे के
नियम और शिक्षा तेज से भरे हैं, तो क्या वह नई प्रतिज्ञा, जो हमारे बुरे
कर्मों के खाते को मिटा देगी और हमें धर्मी भक्त बना देगी, और भी
अधिक तेज से परिपूर्ण नहीं होगी? [10]वास्तव में, नया अनुबंध इतना
अद्भुत है कि मोशे के नियम और शिक्षा का तेज फीका पड़ गया।
[11]मोशे के नियम और शिक्षा ऐसे तेज के साथ दिए गए जो फीका पड़
गए। परंतु नए अनुबंध का तेज कहीं अधिक है, इसलिए यह कभी
फीका नहीं पड़ता।
[12]क्योंकि यह अनुबंध हमें आत्मविश्वास देता है, इसलिए हम बहुत
साहसी हैं। [13]हम मोशे के समान नहीं हैं, जिन्होंने अपना मुँह ढांक लिया

था कि इज़राएल के लोग उस तेज को न देखें, हालाँकि यह तेज बस
जाने वाला ही था। [14]इज़राएल के लोग ढीठ हो गए थे, और आज भी
जब मोशे के नियम और शिक्षा पढ़े जाते हैं तब भी कुछ तो है जो उनमें
बहुत से लोगों को सच्चाई देखने से रोकता है। केवल मुक्तिदाता येशु
ही उस परदे को हटा सकते हैं जो उन्हें सच्चाई देखने से रोकता है। [15]हाँ,
आज भी जब मोशे के नियम और शिक्षा को पढ़ा जाता है, उनके मन
पर एक परदा पड़ा रहता है, [16]किंतु ज्योंही कोई प्रभु की शरण में आता
है, यह परदा हट जाता है। [17]प्रभु और पवित्र आत्मा एक ही हैं, और
प्रभु की आत्मा हमें अंधकार से मुक्त करती है। [18]इसलिए हमारे चेहरे
ढके हुए नहीं हैं। वे प्रभु के तेज को दिखाते हैं, जैसे प्रभु की आत्मा हमें
उनके समान बनने में लगातार हमारी सहायता करती है।

4

परमात्मा का तेज प्रभु येशु में दिखता है

[1]परमात्मा की दया के कारण यह सेवा हमें प्राप्त हुई है। इसलिए हम
निराश नहीं होते। [2]हम शर्मनाक चीज़ें नहीं करते हैं जिनको छुपाना
पड़े। और हम किसी को मूर्ख बनाने या परमात्मा के संदेश में मिलावट
करके नहीं बताते। परमात्मा जानते हैं कि हम केवल सच बोलते हैं,
इसलिए दूसरे इस बात पर यकीन करते हैं कि हम पर भरोसा किया
जा सकता है। [3]जो लोग हमारे संदेश को समझना नहीं चाहते, ये वे
लोग हैं जो परमात्मा को जाने बिना मृत्यु की ओर जा रहे हैं। [4]जो लोग
प्रभु येशु को नहीं मानते, वे शैतान की भक्ति इस संसार के ईश्वर के
रूप में करते हैं। उसने उनके दिमाग को अंधा कर दिया है कि वे उस
शुभ संदेश का प्रकाश न देख सकें जिसमें मुक्तिदाता का तेज प्रकट
होता है। मुक्तिदाता परमात्मा के गुणों को प्रदर्शित करते हैं।

[5]हम अपने बारे में प्रचार नहीं कर रहे हैं। हमारा संदेश है कि
मुक्तिदाता येशु ही दुनिया के प्रभु हैं। हम यह भी प्रचार करते हैं कि
उन्होंने हमें तुम्हारा सेवक बना कर भेजा है। [6]परमात्मा-ग्रंथ कहता है,
“परमात्मा ने प्रकाश को अंधेरे में चमकने की आज्ञा दी।” अब परमात्मा
का तेज हमारे दिलों में चमक रहा है जिससे हम को ज्ञान मिलता है कि
उनका तेज मुक्तिदाता येशु के चेहरे पर भी दिखाई दे रहा है।

इंसान की दुर्बलता और परमात्मा की शक्ति

[7]अब हमारे दिल में यह प्रकाश चमक रहा है, लेकिन हम स्वयं एक
नाजुक मिट्टी के घड़ों की तरह हैं जिसमें यह खज़ाना रखा हुआ है।
इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि वास्तविक शक्ति स्वयं परमात्मा से
आती है हमसे नहीं। [8]हम पर चारों ओर से दुख आते हैं, पर हम टूटते
नहीं। हम परेशान होते हैं, परंतु निराश नहीं होते। [9]मुसीबत के समय
परमात्मा हमारे साथ हैं, और जब हम गिराए जाते हैं, तो हम फिर से
खड़े हो जाते हैं। [10]हम अपने जीवन में ऐसे दुख उठा रहे हैं जैसे प्रभु
येशु को दुख उठा कर मृत्यु का सामना करना पड़ा, परंतु परमात्मा
हमें मरने के बाद जीवित कर देंगे जैसे उन्होंने प्रभु येशु के साथ किया
था। [11]हम जो ज़िन्दा हैं, सदा मौत का सामना करते हैं, क्योंकि हम प्रभु
येशु के मार्ग पर चल रहे हैं। तो लोग हमारे कमज़ोर, मानवीय शरीरों में
देख सकते हैं कि प्रभु येशु का जीवन और शक्ति हम में है। [12]इसका
मतलब है कि तुम्हारी सेवा करते समय मौत से हमारा सामना होता
रहता है परंतु यह तुम्हारे लिए मोक्ष का मार्ग खोलता है।

[13]परमात्मा-ग्रंथ में यह कहा गया है, “मैं इसलिए बोला क्योंकि मुझ
में आस्था है।” हम में भी ऐसी ही आस्था है। इसलिए हम मुखरता से
बोलते हैं [14]क्योंकि हम जानते हैं कि परमात्मा ने प्रभु येशु को ज़िन्दा
किया। और जैसे परमात्मा ने प्रभु येशु को ज़िन्दा किया, वैसे ही वह
हमें भी प्रभु येशु के साथ जीवित करेंगे। तब परमात्मा हमें और तुम्हें
एक साथ अपने सामने खड़ा करेंगे। [15]यह सब तुम्हारे लाभ के लिए
किया गया है, ताकि अधिक से अधिक लोग जान सकें कि परमात्मा
कितने दयालु हैं और वे लोग उनका गुणगान और धन्यवाद करें।

[16]इसलिए हम कभी हार नहीं मानते। हमारे शरीर धीरे-धीरे मर रहे हैं,
लेकिन हमारी आत्मा दिन-ब-दिन मज़बूत होती जा रही है। [17]ये छोटी-छोटी
परेशानियाँ हमें एक सनातन तेज के लिए तैयार कर रही हैं जिसके सामने
हमारी परेशानियाँ बहुत छोटी लगेंगी। [18]जो चीज़ें दिखती हैं वे हमेशा
के लिए नहीं रहतीं, लेकिन जो नहीं दिखतीं वे हमेशा के लिए रहती हैं।
इसलिए हम अपना मन उन चीज़ों पर लगाते हैं जिन्हें देखा नहीं जा सकता।

4:13 भजन शास्त्र 116:10

5
हम स्वर्गीय शरीर धारण करेंगे

1क्योंकि हम जानते हैं कि जिस सांसारिक तंबू में हम रहते हैं, उसे गिरा
दिया जाएगा, अर्थात् जब हम मर जाएँगे और इस मृत शरीर को छोड़
देंगे, तो हमें परमस्वर्ग में एक अनंत काल तक का घर मिलेगा। यह घर
हमारे लिए स्वयं परमात्मा द्वारा बनाया गया है, न कि इंसान के हाथों
द्वारा। 2जब हम इस शरीर में पृथ्वी पर हैं, हम आहें भरते हैं क्योंकि हम
उस स्वर्गीय शरीर-रुपी घर में रहना चाहते हैं। 3और जब हम स्वर्गीय
शरीर धारण करेंगे, तो हम शरीर के बिना आत्मा नहीं होंगे।* 4जब हम
इन सांसारिक शरीरों में रहते हैं, हम कराहते और आहें भरते हैं, लेकिन
ऐसा नहीं है कि हम मरना चाहते हैं और सिर्फ इन शरीरों से छुटकारा पाना
चाहते हैं जिसे हम धारण किए हुए हैं। बल्कि, हम अपने नए शरीर धारण
करना चाहते हैं ताकि इस नाशवान शरीर को छोड़कर मोक्ष पाएँ। 5यह
सब संभव करने वाले परमात्मा ही हैं। उन्होंने हमें यह पक्का करने के लिए
अपनी पवित्र आत्मा हमें बयाने के रूप में दी है कि वह हमको मोक्ष देंगे।
6इसलिए हमें कोई चिंता नहीं रहती, भले ही हम यह जानते हैं कि जब
तक हम इन शरीर रुपी घरों में रहते हैं, हम प्रभु के साथ स्वर्गीय घर में
नहीं हैं। 7हालाँकि हमें अभी स्वर्गीय घर दिखाई नहीं दे रहा है, परंतु हमें
परमात्मा के वादे पर पूरा भरोसा है। 8मैं फिर कहता हूँ, हम पूरी तरह
से निश्चिन्त हैं, और हम इन सांसारिक शरीरों को छोड़ देना पसंद करेंगे,
क्योंकि तब हम प्रभु के साथ स्वर्गीय घर में रहेंगे। 9तो चाहे हम यहाँ इस
शरीर में हों या इस शरीर को छोड़ दें, हमारा लक्ष्य है कि जो परमात्मा
चाहते हैं हम वही करें। 10क्योंकि मुक्तिदाता के न्याय-सिंहासन के सामने
हम सब की असलियत प्रकट हो जाएगी जिससे हर एक व्यक्ति को
अपने जीवन में किए हुए भले या बुरे कर्मों का प्रतिफल मिले।

हम मुक्तिदाता के कारण परमात्मा के लिए दिवाने हैं

11हम जानते हैं कि प्रभु का सम्मान करने का क्या अर्थ है, और हम
सभी को उनपर आस्था रखने की प्रेरणा देते हैं। परमात्मा हमें अच्छी

---

* **5:3** *शरीर के बिना आत्मा* - या, “हम नंगे नहीं रहेंगे”

तरह जानते हैं, और मुझे आशा है कि तुम्हारा मन जनता है कि हम
किस तरह के लोग हैं। [12]क्या हम फिर से तुम्हारे सामने अपनी बड़ाई
कर रहे हैं? नहीं, हम तुमको सिर्फ हम पर गर्व करने का एक कारण दे
रहे हैं, ताकि तुम उन लोगों को जवाब दे सको जो सच्चे दिल के बजाय
शानदार बातों पर घमंड करते हैं। [13]अगर ऐसा लगता है कि हम दिवाने
हैं, तो हाँ, हम परमात्मा के लिए दिवाने हैं और वह इस बात को
समझते हैं। अगर तुमको लगता है कि हम समझदार हैं, तो यह अच्छा
है और जो कुछ हम तुमको समझाएँगे उससे तुमको फायदा होगा।
[14]हम जो कुछ भी करते हैं उसके लिए मुक्तिदाता का प्रेम हमें विवश
करता है। हम मानते हैं कि मुक्तिदाता ने सभी लोगों के लिए अपनी
जान दी। इसलिए हम यह भी मानते हैं कि हम सभी अपने पुराने पापी
जीवन के लिए मर चुके हैं। [15]मुक्तिदाता ने सभी लोगों के लिए अपनी
जान दी। उन्होंने अपनी जान दी ताकि अब हम केवल अपने लिए ही
न जिएँ, परंतु मुक्तिदाता येशु की इच्छा को पूरा करने के लिए जिएँ।
उन्होंने हमारे लिए अपनी जान दी और परमात्मा ने उन्हें ज़िन्दा कर
दिया।

[16]हम इस बात का ध्यान रखते हैं कि लोगों को इस आधार पर
न जाँचें कि वे कैसे दिखते हैं और उनका सामाजिक स्तर क्या है,
हालाँकि हमने उस आधार पर मुक्तिदाता को जाँचने की गलती भी
की थी, लेकिन हम अब ऐसा नहीं करते हैं। [17]जिसने भी मुक्तिदाता की
शरण ली है, वह नया व्यक्ति बन गया है। उसका पुराना पापी जीवन
चला गया है, एक नया जीवन शुरू हो गया है। [18]यह सब परमात्मा ने
किया है। उन्होंने मुक्तिदाता द्वारा अपने साथ हमारा मिलाप कर लिया
है और उन्होंने हमें लोगों का उनके साथ मेल-मिलाप करने का काम
सौंपा है। [19]दूसरे शब्दों में, परमात्मा सभी लोगों के लिए मुक्तिदाता
के माध्यम से अपने साथ मेल-मिलाप करने का मार्ग बना रहे थे।
इस कारण उन्होंने लोगों के पापों का हिसाब न रखा। तब उन्होंने हमें
संसार के लोगो के लिए मेल-मिलाप का यह अद्‌भुत संदेश दिया।

[20]हम मुक्तिदाता के राजदूत हैं और परमात्मा तुमसे हमारे द्वारा
विनती कर रहे हैं कि तुम उनके संदेश सुनो। हम मुक्तिदाता की ओर से
कहते हैं कि परमात्मा के साथ मिलाप कर लो। [21]परमात्मा ने हमारे सारे

बुरे कर्मों का हिसाब मुक्तिदाता के खाते में लिख दिया* जब कि उन्होंने एक भी बुरा काम नहीं किया था। परमात्मा ने ऐसा इसलिए किया ताकि मुक्तिदाता ने जो किया है, उसके माध्यम से वे हमारे बुरे कर्मों के खाते को मिटा सकें और हमें धर्मी बना सकें।

6

कष्टों में खुश रहना

[1]हम परमात्मा के साथ मिलकर काम करते हैं, और हम तुमसे
विनती करते हैं कि तुम पर जो परमात्मा की कृपा बरसी है, उसका
अच्छा उपयोग करो। [2]परमात्मा अपने ग्रंथ में कहते हैं, “सही समय
पर मैंने तुम्हारी सुनी है, और जब तुम्हें सहायता की ज़रूरत पड़ी, तो
मैं तुम्हें बचाने आया हूँ।” वह सही समय आ गया है। यह तुम्हारे लिए
मुक्ति का समय है। [3]हम ऐसा कुछ नहीं करते जिससे लोग परमात्मा
से दूर हो जाएँ या लोग यह सोचें कि हम परमात्मा के मार्ग पर नहीं
चल रहे हैं। [4]लेकिन हर चीज़ में और हर तरह से हम दिखाते हैं कि
हम वास्तव में परमात्मा के सेवक हैं। हम हमेशा सबर से काम लेते हैं,
हालांकि हमें बहुत परेशानी, पीड़ा और कठिन समय का सामना करना
पड़ा है। [5]हमें पीटा गया है, जेल में डाला गया है और दंगों में घायल
किया गया है। हमने कड़ी मेहनत की है और बिना नींद और भोजन के
रहे हैं। [6]लेकिन हमने खुद को पवित्र रखा है और समझदार और दयालु
रहे हैं, तथा हमने सबर से काम लिया है। परमात्मा की पवित्र आत्मा
हमारे साथ रही है, और हम दूसरों से दिल से प्रेम करते हैं। [7]हमने सच
बोला है, और परमात्मा की शक्ति ने हम में काम किया है। हमारा
धर्मी जीवन ही हमारा एकमात्र बचाव और हथियार है। [8]हम परमात्मा
की सेवा करते हैं, चाहे लोग हमारा आदर करें या तिरस्कार, चाहे वे
हमारी बुराई करें या बड़ाई। हम ईमानदार हैं, लेकिन वे हमें धोखेबाज़
कहते हैं। [9]दूसरे लोग हमें नहीं जानते, किंतु तुम हमें अच्छी तरह जानते
हो। हमारा मौत से सामना होता रहता है, लेकिन देखो, हम फिर भी

*** 5:21** *परमात्मा ने हमारे सारे बुरे कर्मों का हिसाब मुक्तिदाता के खाते में लिख दिया* - या, “परमात्मा ने उन्हें हमारे लिए पाप बना दिया”

ज़िन्दा हैं। हमें पीटा गया है, लेकिन हमारे प्राण नहीं लिए जा सकते।
[10]हम हमेशा दुखों में भी खुश रहते हैं। हालाँकि हम गरीब हैं, किंतु
बहुतों को अमीर बनाते हैं। हमारे पास कुछ न होते हुए भी सबकुछ है।
[11]कुरिंथ शहर के सत्संगियों, हम सच कह रहे हैं कि हमारे दिल में
तुम्हारे लिए बहुत जगह है। [12]हमारा प्रेम तुम्हारे लिए कम नहीं हुआ
है, किंतु हमारे लिए तुम्हारा प्रेम कम हो गया है। [13]मैं तुमसे वैसे ही
बात करता हूँ जैसे मैं अपने बच्चों से करता हूँ। कृपया हमारे लिए अपने
दिलों में जगह बनाएँ।

जीवित परमात्मा का मंदिर

[14]उन लोगों को अपना सहभागी न बनाओ जो प्रभु येशु के भक्त
नहीं हैं। धर्मी और अधर्मी कैसे एक साथ मिलकर काम कर सकते
हैं? प्रकाश और अँधेरा दोनों एक साथ नहीं रह सकते। [15]मुक्तिदाता
का शैतान के साथ भला क्या तालमेल? भक्त का नास्तिक के साथ
क्या लेना-देना? [16]और मूर्तियों के साथ परमात्मा के मंदिर का क्या
सम्बन्ध? क्योंकि हम जीवित परमात्मा के मंदिर हैं! जैसा कि परमात्मा
अपने ग्रंथ में कहते हैं,

“मैं अपने लोगों के बीच निवास करूँगा
और चला-फिरा करूँगा।
मैं उनका परमात्मा होऊँगा
और वे मेरे लोग।”

[17]इस कारण प्रभु परमात्मा का कहना है,

“जो मेरे भक्त नहीं हैं उनके बीच से निकल आओ
और अलग हो जाओ।
किसी अपवित्र चीज़ को मत छुओ
और मैं तुम्हें अपना लूँगा।”

[18]सर्वशक्तिमान प्रभु परमात्मा का यह भी कहना है, “मैं तुम्हारा पिता
परमात्मा हूँगा और तुम मेरे बेटे और बेटियाँ होगे।”

6:16 लेवी 26:12; यरमियाह 32:8; यहेजकेल 37:27 **6:17** यशायाह 52:11; यहेजकेल 20:34,41
6:18 2 शमुएल 7:14

7

[1]प्रिय मित्रो, क्योंकि ये वादे हमसे किए गए हैं, तो हम अपने को
सारी शरीरिक और आत्मिक अपवित्रता से दूर रखें और परमात्मा का
डर मानकर जीवन के हर हिस्से को पवित्र बनाएँ।

ठेस लगने से पश्चाताप का रास्ता खुला

[2]हमें अपने दिल में जगह दो। हमने किसी के साथ बुरा नहीं किया,
किसी को धोखा नहीं दिया, किसी का गलत फायदा नहीं उठाया। [3]मैं
यह इसलिए नहीं कह रहा कि मुझे तुम्हारे प्रेम पर शक है। मैंने पहले
कहा था कि तुम हमारे दिलों में हो, और हम तुम्हारे साथ जिएँगे और
मरेंगे। [4]मुझे तुम पर बहुत भरोसा है कि जो कुछ भी तुम करोगे, सही
करोगे। मुझे तुम पर बहुत गर्व है। इस कारण मेरे मन में शांति है और
सारी परेशानियों में भी मैं बहुत खुश हूँ।
[5]हमारे मैसेडोनिया प्रदेश में रहने के दौरान भी हमें कुछ आराम
नहीं मिला, हमें हर तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ा। हम
विरोधियों से परेशान थे और मन को डर ने जकड़ रखा था। [6]लेकिन
निराश लोगों को खुश करने वाले परमात्मा ने भक्त भाई तीतुस के आने
से हमें खुशी दी। [7]बेशक, हम तीतुस को देखकर खुश थे, लेकिन जिस
तरह से तुमने तीतुस का उत्साह बढ़ाया है उससे हमें और भी खुशी हुई
है। उसने बताया कि हमारे बीच जो कुछ भी घटा, उसके बारे में तुम्हें
अफ़सोस है और तुम मेरे बारे में कितने चिंतित थे! और इन बातों को
सुनकर मुझे और भी खुशी मिली। [8]मेरे सख्त पत्र से तुम्हें दुख पहुँचा,
इसका मुझे बहुत समय तक अफसोस रहा, परंतु अब मुझे अफसोस
नहीं है, क्योंकि मैं देखता हूँ कि उस पत्र से कुछ समय तक ही तुम
दुखी रहे। [9]अब मुझे खुशी है कि मैंने यह सख्त पत्र भेजा, इसलिए
नहीं कि इससे तुमको ठेस लगे, बल्कि इसलिए कि यह ठेस तुमको
अपने बुरे कर्मों से पश्चाताप करने की प्रेरणा दे। परमात्मा ने तुम्हें इस
तरह की ठेस के दर्द से गुज़रने दिया ताकि तुम्हारे जीवन में एक बड़ा
बदलाव आ सके। हालाँकि तुम्हें हमसे ठेस तो लगी परंतु तुम्हारा
नुकसान नहीं हुआ। [10]क्योंकि जिस प्रकार की ठेस परमात्मा चाहते हैं
कि हमें लगे, वह ठेस हमें सुधारने के लिए है जो हमें पाप के मार्ग से

दूर ले जाकर मुक्ति के मार्ग पर ले आती है। उस तरह की ठेस लगने का कोई अफसोस नहीं होना चाहिए। लेकिन सांसारिक ठेस, जो हमें पाप के मार्ग पर ही बनाए रखती है, उससे हमें आत्मिक मृत्यु मिलती है।

[11]ज़रा देखिए, परमात्मा ने जो ठेस तुम्हें लगने दी, उससे तुम्हारे
जीवनों में कितने सुंदर बदलाव हुए! भक्ति में तुम और गहरे हुए और
तुमने दिखाया कि तुमने अपना मार्ग बदल लिया है। अब तुम पाप से
नफरत करने लगे हो और तुम परमात्मा से डरने लगे हो। तुममें मुझसे
मिलने की लालसा बढ़ गई। तुममें अच्छे काम करने का जोश बढ़
गया है और तुममें यह इच्छा जग गई है कि बुरे काम करने वालों को
सज़ा मिले। तुमने चीज़ों को ठीक करने के लिए अपनी तरफ से हर
ज़रूरी काम किया है। [12]मैंने सिर्फ उस व्यक्ति के साथ निपटने के
इरादे से तुम्हें सख्त पत्र नहीं लिखा जिसने गलत किया और मैंने सिर्फ
उस व्यक्ति के लिए नहीं लिखा जिसने उसे ठेस पहुँचाई। मैंने तुमको
लिखा ताकि परमात्मा तुमको दिखाएँ कि तुम हमारे कितने वफादार
हो। [13]इससे हमारे मन को बहुत शांति मिली। शांति के साथ-साथ हमें
तीतुस की खुशी को देखकर खुशी भी हुई थी, क्योंकि उसका मन
तुम सब से बहुत संतुष्ट है। [14]मैंने तीतुस से कहा कि मुझे तुम पर गर्व
है और तुमने अपने कार्यों से मुझे शर्मिंदा नहीं किया। जिस प्रकार मैंने
हमेशा तुमसे सच्ची बात कही थी, उसी प्रकार तीतुस के सामने मेरा गर्व
करना भी सच साबित हुआ। [15]अब वह तुमसे पहले से कहीं अधिक
प्रेम करता है जब वह याद करता है कि किस तरह से तुम सभी ने
उसकी बात मानी थी और परमात्मा के भय के साथ उसका स्वागत
किया था [16]मैं अब बहुत खुश हूँ क्योंकि मुझे तुम पर पूरा भरोसा हो
गया है।

8

कठिनाई में भी उदारता से दान देना

[1]अब मैं चाहता हूँ कि तुम जान लो, प्रिय भक्त भाइयो और बहनो,
कि परमात्मा ने अपनी कृपा से मैसेडोनिया प्रदेश के सत्संगों के
माध्यम से क्या किया है। [2]परेशानियों की अग्नि-परीक्षा में भी उनकी

खुशी में कुछ कमी नहीं आई और अपनी अत्यंत गरीबी की दशा में भी
उन्होंने खुले दिल से दान दिया है। [3]क्योंकि मैं इस सच्चाई की पुष्टि कर
सकता हूँ कि उन्होंने किसी के सोचने से भी कहीं अधिक दिया, और
उन्होंने बिना किसी दबाव के अपनी मर्ज़ी से ऐसा किया। [4]उन्होंने हमसे
पूछा और विनती की कि उन्हें यरूशलम शहर के परमात्मा के पवित्र
भक्तों के लिए अपना दान देने के आनंद में शामिल होने का अवसर
मिले। [5]जो कुछ भी उन्होंने किया वह सब हमारी सोच से परे था।
इससे भी महत्वपूर्ण उन्होंने, जैसा परमात्मा चाहते थे, सबसे पहिले
अपने आप को प्रभु के लिए, और फिर हमारे लिए समर्पित कर दिया।
[6]इसलिए हमने भक्त तीतुस से विनती की है, जिसने जब वह पहली
बार आया था तुमको दान देने की प्रेरणा दी थी, कि तुम्हारे पास वापस
आए और जो दान देने के बारे में तुम विचार कर रहे थे उसको देने के
लिए तुम्हें उत्साहित करे। [7]तुम बहुत अच्छे लोग हो। तुम्हारी आस्था
मजबूत है, तुम सच बोलते हो, तुम बहुत ज्ञानी हो, तुम्हारे प्यार में
ईमानदारी है। अब हम चाहते हैं कि तुम दान भी दिल खोल कर दो।
[8]मैं तुम्हें दान देने का हुक्म नहीं दे रहा हूँ, लेकिन मैं अन्य सत्संगों के
उत्साह की तुलना में तुम्हारा प्यार कितना वास्तविक है, इसकी परख
कर रहा हूँ। [9]तुम हमारे मुक्तिदाता प्रभु येशु की कृपा को जानते हो।
उन्होंने परमस्वर्ग का महल छोड़ दिया और वह तुम्हारे लिए गरीब बन
गए, ताकि अपनी गरीबी में जो वरदान वह तुम्हें दें, उनसे तुम अमीर
बन सकते हो। [10]यहाँ मेरी सलाह है कि जो तुमने एक साल पहले शुरू
किया था, उसे पूरा करना तुम्हारे लिए अच्छा होगा। पिछले साल
सबसे पहले तुम्हारे सत्संग ने दान देने के बारे में सोचने की शुरुआत
की और तुमने सबसे पहले थोड़ा दान दिया भी। [11]अब तुमने जो
शुरुआत की थी उसे पूरा भी करो। जैसे तुमने शुरुआत में दान देने का
उत्साह दिखाया था, अब तुम जो दान दे सकते हो तुम्हें दे देना चाहिए।
[12]इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि तुम्हारे पास कितना है। मायने यह
रखता है कि तुम्हारे पास जो है, उसमें से तुम कितना देने को तैयार
हो। [13]बेशक, मेरा मतलब यह नहीं है कि तुम्हारे दान देने से दूसरों का
जीवन आसानी से बीतने लगे और तुम आर्थिक परेशानियों से घिर
जाओ। मेरा मतलब है कि दान देने वाले और दान लेने वाले दोनों में

से किसी को भी कोई कमी नहीं होनी चाहिए। [14]अभी तुम्हारे पास
बहुत कुछ है और तुम जरूरतमंदों की मदद कर सकते हो। बाद में,
जब तुम्हारे पास नहीं होगा और जिनकी तुमने मदद की थी उनके पास
बहुत कुछ होगा तो वे तुम्हारे साथ साझा कर सकते हैं। इस तरह चीज़ें
बराबर हो जाएँगी। [15]जैसे परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है, “जिसने बहुत
कुछ जमा किया, उसके पास जरूरत से ज्यादा नहीं था, जिसने थोड़ा
जमा किया, उसके पास ज़रूरत के समय कमी नहीं पड़ी।”

दान के प्रति ईमानदारी

[16]परमात्मा का धन्यवाद हो! उन्होंने तीतुस के मन में तुम्हारे लिए वही
प्रेम भरा है जो मेरे मन में है। [17]जब हमने तीतुस से तुमसे मिलने के लिए
कहा, तो उसने कहा कि वह जाएगा। वह जाना इसलिए भी चाहता था
क्योंकि वह तुमसे बहुत प्रेम करता है। [18]उसके साथ हम उस भाई को
भी भेज रहे हैं जो सब सत्संगों में शुभ संदेश का प्रचार करने के लिए
सराहा जाता है। [19]सत्संगों ने इस भाई को हमारे साथ यात्रा करने के
लिए चुना है जब हम इस दान राशि को लेकर चलते हैं जिससे प्रभु का
गुणगान होगा और दिखाएगा कि हम मदद करने को हमेशा तैयार हैं।
[20]हम सब एक साथ यात्रा इसलिए कर रहे हैं ताकि कोई हम पर यह
उँगली न उठा पाए कि हमने इस दान राशि को अच्छी तरह संभाला
नहीं। [21]हम उन बातों का ध्यान रखते हैं जो केवल प्रभु के सामने ही नहीं,
बल्कि लोगों के सामने भी अच्छी हैं। [22]हम उनके साथ अपने एक और
भाई को भी भेज रहे हैं जिसने कई बार खुद को साबित किया है और
कई मौकों पर दिखाया है कि वह सच्चा भक्त है और मदद करने के लिए
हमेशा तैयार है। अब तो वह मदद करने के लिए पहले से भी ज़्यादा
तैयार है क्योंकि वह तुम पर पूरा भरोसा करता है। [23]तीतुस मेरा साथी
है जो तुम्हारी सेवा के लिए मेरे साथ काम करता है, और मुक्तिदाता
का सम्मान करने वाले अन्य दो भाइयों को सत्संगों द्वारा भेजा गया है।
[24]उनके साथ ऐसा व्यवहार करें कि सत्संग तुम्हारे प्रेम को देख सकें
और जान सकें कि हम तुम्हारे बारे में घमंड क्यों करते हैं।

8:15 निर्गमन 16:18

9

धर्मी दान खुशी से देता है

[1]ज़रूरतमंद पवित्र भक्तों को* तुम जो दान देने की योजना बना
रहे हैं, उसके बारे में मुझे तुम्हें और लिखने की ज़रूरत नहीं लगती।
[2]मुझे पता है कि तुम दान देने के लिए कितने उत्सुक हो। और मैंने
मैसेडोनिया प्रदेश में सत्संगियों को बड़े गर्व से कहा है कि आखेया में
तुम लोग दान देने के लिए पूरे एक वर्ष से तैयार हो। अब तुम्हारे देने
की उत्सुकता ने मैसेडोनिया के सत्संगियों में भी देने की इच्छा को
बढ़ा दिया है। [3]इसलिए मैं तीतुस और दो अन्य भक्तों को तुम्हारे पास
भेज रहा हूँ। मैं चाहता हूँ कि तुम तैयार रहो, जैसा कि मैंने तुमसे पहले
ही कह दिया था। इससे यह सिद्ध होगा कि हमारा तुम पर गर्व करना
गलत नहीं था। [4]मैसेडोनिया से कुछ सत्संगी मेरे साथ आ सकते हैं,
और मैं चाहता हूँ कि उन सत्संगियों को पता हो कि तुम्हारे पास सारा
दान इकट्ठा हो गया है। यदि ऐसा नहीं होगा, तो जो भरोसा मैंने तुमपर
किया था वह टूट जाएगा और मुझे शर्मिंदगी होगी। लेकिन तुम्हें और
भी शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी! [5]इसलिए मैंने इन भाइयों को मेरे आने से
पहले तुम्हारे साथ कुछ समय बिताने के लिए कहा है। इस तरह तुमने
जो दान देने का वादा किया था उसे वे तुमसे प्राप्त कर लेंगे। मैं चाहता
हूँ तुम्हारा यह दान अपनी इच्छा और खुशी के साथ दिया जाए ना कि
मजबूर होकर।

[6]यह कहावत याद रखो, “जो किसान थोड़े बीज बोता है, वह
थोड़ी फसल काटेगा। और जो बहुत बीज बोता है, वह बहुत फसल
काटेगा।” [7]जिसने मन में जितना सोचा है, उतना दान दे। दुखी होकर
या दबाव के कारण न दे, क्योंकि परमात्मा खुशी से दान देने वाले को
प्यार करता है। [8]परमात्मा तुमको वह सब कुछ देंगे जिसकी तुमको
ज़रूरत है, और तुम्हारे पास हमेशा दूसरों को देने लिए सभी प्रकार की
चीज़ें अच्छी मात्रा में होंगी। [9]परमात्मा-ग्रंथ में लिखा है, “धर्मी भक्त
गरीबों को दिल खोल कर दान देता है, उसके अच्छे कामों को कभी

---

* **9:1** *ज़रूरतमंद पवित्र भक्तों को* - यह संभवतः येशु के जरूरतमंद भक्तों को संदर्भित करता है जो यरूशलम शहर में रह रहे थे। पौलुस ने पतरस, याकोब और योहन से वादा किया था कि वह गरीबों की मदद करना जारी रखेगा (गलतियों 2:10)।

नहीं भुलाया जाएगा।” [10]क्योंकि परमात्मा ही हैं जो किसान को बीज
देते हैं और जिससे हम सब को रोटी मिलती है। उसी तरह, परमात्मा
तुम्हें बहुत कुछ देंगे और फिर तुम ज़रूरतमंदों को दिल खोल कर
दान दे सकते हो। [11]हाँ, तुम्हें हर तरह का आशीर्वाद मिलेगा ताकि
तुम हमेशा उदारता से दे सको। और जब हम तुम्हारा दान उन पवित्र
भक्तों को देंगे जिन्हें उसकी ज़रूरत है, तो वे परमात्मा का धन्यवाद
करेंगे। [12]क्योंकि इस दान देने के सेवाकार्य से पवित्र भक्तों की ज़रूरतें
ही पूरी नहीं होतीं, बल्कि इससे परमात्मा के प्रति उनकी धन्यवाद
की भावना भी उमड़ती है। [13]जिस तरह से तुमने इस दान देने की सेवा
के द्वारा खुद को साबित किया है, उससे परमात्मा का गुणगान होगा।
तुमने मुक्तिदाता के संदेश पर विश्वास किया और इन भक्तों और
अन्य सभी को दिल खोलकर दान देकर उसका पालन किया। [14]तुम
पर परमात्मा की महान कृपा देखकर तुम्हारे प्रति इन भक्तों का प्रेम
उमड़ पड़ेगा और वे तुम्हारे लिए प्रार्थना करेंगे। [15]परमात्मा के इस दान
के लिए उनको बहुत धन्यवाद। इसको शब्दों में प्रकट नहीं किया जा
सकता है!

10

परमात्मा की ओर से पौलुस को अधिकार

[1]मुझे अहसास है कि तुम सोचते हो कि जब मैं तुम्हारे साथ होता
हूँ तो मैं बहुत कोमल स्वभाव का दिखता हूँ, लेकिन जब मैं दूर होता
हूँ और जो पत्र मैं तुमको लिखता हूँ वे बहुत सख्त होते हैं। लेकिन मैं,
पौलुस तुमको बताना चाहता हूँ कि मैं हमेशा मुक्तिदाता की तरह नम्र
और दयालु बनना चाहता हूँ। [2]कुछ लोगों ने कहा है कि हम सांसारिक
लोगों की तरह काम करते हैं। इसलिए जब मैं आऊँगा, तो लगता
है कि मुझे उनसे सख्त लहजे में बात करनी होगी। कृपया मुझे तुम्हारे
साथ ऐसा करने के लिए मजबूर न करें। [3-4]हम इस संसार में रहते हैं,
लेकिन हम इसके लोगों की तरह काम नहीं करते हैं या इस संसार के
हथियारों से अपनी लड़ाई नहीं लड़ते हैं। इसके बजाय, हम परमात्मा

9:9 भजन शास्त्र 112:9

की शक्ति का उपयोग करते हैं जो शैतान द्वारा प्रोत्साहित झूठे विचारों
को नष्ट करती है। [5]हम घमंड की उस हर एक दिवार को गिराते हैं जो
लोगों को परमात्मा को जानने से रोकती है। हम बागी विचारों का
विरोध करते हैं और लोगों को मुक्तिदाता की आज्ञा पालन करना
सिखाते हैं। [6]और जब तुम पूरी तरह से आज्ञाकारी हो जाओगे, हम
किसी को भी दंडित करने के लिए तैयार होंगे जो अभी भी आज्ञा का
पालन नहीं करते हैं।

[7]सच को पहचानो। यदि तुम में से कोई सोचता है कि केवल तुम
ही मुक्तिदाता के हो, तो फिर दोबारा इस बारे में सोचो। हम भी
मुक्तिदाता के उतने ही हैं जितना कि तुम अपने आप को समझते हो।
[8]तुम्हें ऐसा लगता होगा कि मैं प्रभु द्वारा हमें दिए गए अधिकार के बारे
में बहुत अधिक घमंड कर रहा हूँ। परंतु हमारा अधिकार तो तुम्हें
मज़बूत करता है, न कि तुमको कमज़ोर बनाता है। इसलिए मुझे अपने
अधिकार पर घमंड करने में कोई शर्म नहीं आती। [9]मैं अपने पत्र से
तुम्हें डराने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। [10]कुछ लोग मेरे बारे में कहते
हैं, “उसके पत्र तो सख्त और प्रभावशाली होते हैं, पर जब हम उससे
व्यक्तिगत रूप से मिलते हैं तब वह डरपोक लगता है तथा उसकी
भाषा में कोई प्रभावशाली बात नहीं होती।” [11]उन लोगों को यह अच्छी
तरह समझ लेना चाहिए कि जब हम तुम्हारे साथ होते हैं, तो हम
बिल्कुल वैसा ही करते हैं जैसा हम अपने पत्रों में कहते हैं।

[12]हम उन लोगों से अपनी तुलना नहीं करना चाहते जो अपनी ही
तारीफों के पुल बांधते हैं। वे लोग अपनी तुलना केवल अपने आप
से करके मूर्खता का काम कर रहे हैं। [13]हम किसी ऐसी बात पर गर्व
नहीं करेंगे जिसके बारे में हमें गर्व करने का अधिकार नहीं है। हम
केवल उस कार्य के बारे में घमण्ड करेंगे जिसे करने के लिए परमात्मा
ने हमें भेजा है, और तुम उस कार्य का हिस्सा हो। [14]हम अपनी सीमा से
अधिक गर्व नहीं कर रहे हैं। सच बात तो यह है, हम ही ने तुम्हारे शहर
में सबसे पहले मुक्तिदाता का शुभ संदेश सुनाया।

[15]हम दूसरों की मेहनत पर अपना ठप्पा लगाकर गर्व नहीं करते। हमें
आशा है कि ज्यों-ज्यों तुम्हारी आस्था मज़बूत होगी, तुम्हारे बीच हमारे
काम करने का दायरा भी बढ़ता जाएगा। [16]तब हम तुम्हारी जगह से दूर

जाकर शुभ संदेश का प्रचार कर सकेंगे, जहाँ और कोई प्रचार न कर
रहा हो। तब किसी और के क्षेत्र में किए गए काम के बारे में हमारे गर्व
करने का कोई सवाल ही नहीं उठता। [17]जैसा कि परमात्मा-ग्रंथ कहता
है, "गर्व करने वाला अपने पर नहीं, प्रभु परमात्मा पर ही गर्व करे।"
[18]क्योंकि जो अपनी बड़ाई खुद करता है वह बड़ाई के लायक नहीं,
किंतु जिसकी बड़ाई प्रभु करते हैं, वह बेशक बड़ाई के लायक है।

11

ढोंगियों के जाल में मत फँसना

[1]कृपया मेरी थोड़ी सी मूर्खता सहन कर लीजिए। [2]जैसे परमात्मा
तुमको गहराई से प्रेम करते हैं, वैसे ही मैं भी तुमको गहराई से प्रेम
करता हूँ। मैंने तुम्हारे कुरिन्थ शहर के सत्संग को तुम्हारे एक मात्र
दूल्हे, मुक्तिदाता येशु के साथ शादी के लिए दे दिया है जैसे एक पिता
अपनी कुंवारी कन्या को देता है। [3]पर अब मुझे डर है कि तुम बहकावे
में न आ जाओ जैसे उस झूठे सांप ने हव्वा को बहकाया था। मुझे डर
है कि कहीं तुम अपने दूल्हे मुक्तिदाता के प्रति वफ़ादार रहना छोड़ दो
और उनके प्रति तुम्हारी ईमानदारी और भक्ति खत्म हो जाए। [4]जो कुछ
भी तुम्हें प्रचार किया जाता है, उसे तुम खुशी-खुशी मान लेते हो, भले
ही वे हमारे प्रभु येशु के स्थान पर किसी और येशु नाम वाले व्यक्ति
का प्रचार हो। तुम परमात्मा की पवित्र आत्मा के स्थान पर किसी भी
आत्मा को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाते हो और जिस शुभ
संदेश पर तुमने विश्वास किया है, उससे अलग संदेश को भी अपनाने
के लिए तैयार हो जाते हो।

[5]लेकिन मैं खुद को इन "बड़े राजदूतों" से, जो इस तरह का प्रचार
करते हैं किसी भी तरह से कम नहीं मानता। [6]संभव है कि मैं भाषण देने
में कच्चा हूँ, पर ज्ञान में नहीं। हमने तुम पर हर संभव तरीके से यह स्पष्ट
कर दिया है। [7]क्या मैंने इसमें कोई पाप किया कि तुम्हें ऊँचा उठाने
के लिए अपने को नीचा किया और परमात्मा का शुभ संदेश तुमको
मुफ्त सुनाया? [8]नहीं, इसके बजाय मैंने अन्य सत्संगों का दान स्वीकार

10:17 यरमियाह 9:24

करके उनका कुछ फायदा उठाया ताकि मैं तुम्हारी मदद कर सकूँ।
9जब मैं तुम्हारे यहाँ था तब आर्थिक ज़रूरत होने पर भी मैंने तुम पर
अपना भार नहीं डाला, क्योंकि मैसेडोनिया प्रदेश से आए हुए भाइयों ने
मेरी ज़रूरतें पूरी कर दीं। मैंने किसी प्रकार अपने आपको तुम पर भार
नहीं बनने दिया, और न बनने दूँगा। 10मैं मुक्तिदाता की बात सच्चाई से
करता हूँ जब मैं कहता हूँ कि आखेया के सभी क्षेत्रों में मुझे इस पर गर्व
करने से कोई नहीं रोक सकेगा। 11तुम यह मत समझना कि मैं ये सारी
बातें इसलिए कह रहा हूँ कि मैं तुमसे प्रेम नहीं करता? परमात्मा जानते
हैं कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ!
12मैंने वही करने की योजना बनाई है जो मैंने हमेशा किया है। तब वे
लोग जो हम कर रहे हैं, वही करने के बारे में घमंड नहीं कर पाएँगे। 13वे
लोग झूठे राजदूत और बेईमान कार्यकर्ता हैं। ये मुक्तिदाता के राजदूत
होने का सिर्फ ढोंग करते हैं। 14इसमें कोई हैरानी की बात नहीं, क्योंकि
स्वयं शैतान तेजस्वी स्वर्गदूत का रूप धारण करने का ढोंग करता है।
15इसलिए यह कोई हैरानी की बात नहीं है कि उसके सेवक परमात्मा
के धर्मी सेवक होने का ढोंग करेंगे। जैसे उनके काम हैं वैसे ही उनका
अंत भी होगा।

पौलुस को घोर परेशानियाँ झेलनी पड़ी

16मैं फिर कहता हूँ कि कोई मुझे मूर्ख न समझे, अगर तुम मुझे मूर्ख
समझते ही हो तो मुझे गर्व भी करने दो। 17जब मैं यह सब गर्व करता
हूँ, तो मूर्ख व्यक्ति की तरह करता हूँ, न कि प्रभु के भक्त के रूप
में। 18जब अनेक लोग अपनी तरक्की पर गर्व करते हैं तो मैं भी क्यों न
करूँ? 19तुम्हें लगता है कि तुम बहुत समझदार हो, लेकिन तुम मूर्खों
की बातों को बड़े मज़े से सुनते हो! 20तुम लोगों के गुलाम बन जाते हो
और वे तुमको धोखा देते हैं और तुम्हारी चोरी करते हैं। जब लोग तुम्हें
नीची नज़र से देखते हैं या तमाचा मारते हैं तो तुम्हें बुरा नहीं लगता।
21मुझे इस बात से शर्मिंदगी है कि हम ऐसे व्यवहार का विरोध जम
कर नहीं कर पाए।

यदि वे गर्व कर सकते हैं, तो मैं भी कर सकता हूँ, परंतु गर्व करना
मूर्खता की बात है। 22क्या वे यहूदी हैं? मैं भी हूँ। क्या वे इज़राएल

के हैं? मैं भी हूँ। क्या वे कुलपिता अब्राहम की संतान हैं? मैं भी हूँ।
[23]क्या वे मुक्तिदाता के सेवक हैं? मेरा पागलपन माफ करो। मैंने
उनसे बढ़कर मुक्तिदाता की सेवा की है। मैंने उनसे ज़्यादा मेहनत
की है और मैं उनसे अधिक बार जेल में डाला गया हूँ। न मालूम मैंने
कितनी बार चाबुक की मार सही और अनेक बार मेरे प्राण संकट
में पड़े हैं। [24]यहूदी कट्टरपंथियों ने मुझे पांच अलग-अलग मौकों पर
उनतालीस-उनतालीस कोड़े मारे जो उनके कानून की अधिकतम
सीमा थी। [25]तीन बार मुझे डंडे से पीटा गया। एक बार मुझ पर पथराव
किया गया। मेरी अनेक समुद्र यात्राओं में से तीन बार जिस जहाज़ पर
मैं था वे बर्बाद हो गए। एक बार मैंने जहाज़ के टुकड़े होने पर एक
दिन और एक रात समुद्र पर बहते हुए बिताए। [26]अपनी कई यात्राओं
के दौरान मुझे नदियों, लुटेरों, यहूदी लोगों और दूसरे लोगों से जोखिम
का सामना करना पड़ा। मेरा जीवन हमेशा खतरों को झेलता रहा चाहे
मैं किसी शहर में रहा, या रेगिस्तान की यात्रा की, या पानी के जहाज़ में
यात्रा की। मुझे उन लोगों से भी खतरा रहा जो नकली येशु-भक्त थे।
[27]मैंने कई दिन कठिन मेहनत करते हुए बिताए और कई रातें बिना
सोए बिताई हैं। मैं भूखा-प्यासा रहा हूँ, अक्सर मेरे पास खाने के लिए
कुछ भी नहीं होता था। बिना गर्म कपड़ों के मुझे ठंड में कांपना पड़ा
था।

[28]इन सब परेशानियों का सामना करने के अलावा रोज़ाना मेरे मन
में सिर्फ यही चिंता लगी रहती है कि सत्संगी कैसे चल रहे हैं। [29]जब
सत्संगी किसी भी तरह से कमज़ोर होते हैं तो मेरा मन दुखी होता है।
जब उनको पाप में फंसाया जाता है, तो मुझे उन फँसाने वालों पर
गुस्सा आता है। [30]यदि गर्व करना ही है तो मैं उन परिस्थितियों के बारे
में करूँगा जब मैं कमजोर था लेकिन परमात्मा ने मेरी मदद की। [31]हमारे
प्रभु येशु के पिता परमात्मा, जिनका गुणगान हमेशा होता रहे, जानते हैं
कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूँ। [32]जब मैं दमस्कस शहर में था तो राजा
अरेतास के एक राज्यपाल ने शहर के दरवाज़ों पर पहरा बैठाकर मुझे
गिरफ्तार करना चाहा। [33]परंतु मुझे गिरफ्तारी से बचाने के लिए शहर
के चारों ओर बनी सुरक्षा दीवार में एक छेद के माध्यम से टोकरी में
बैठाकर नीचे उतार दिया गया। 48:29

12

पौलुस का अद्भुत दर्शन

[1]मुझे गर्व करना है हालाँकि उस से कुछ फायदा नहीं होगा। परंतु जो
दर्शन प्रभु ने मुझे दिखाए हैं, उन पर मैं गर्व करूँगा।
[2]मुक्तिदाता के एक भक्त के रूप में, मुझे चौदह साल पहले परमस्वर्ग*
में ले जाया गया, मेरे शरीर के साथ या सिर्फ आत्मा के साथ, यह
परमात्मा जानें, मैं नहीं। [3]जैसा कि मैंने कहा, केवल परमात्मा ही वास्तव
में जानते हैं कि क्या मैं उस समय अपने शरीर में था। [4]लेकिन मुझे स्वर्ग
में ले जाया गया, जहाँ मैंने ऐसे पवित्र शब्द सुने जो बयान से परे हैं। [5]यह
एक अद्भुत अनुभव था, लेकिन मैं इसके बारे में घमंड नहीं कर सकता।
मैं केवल अपनी कमज़ोरियों पर घमंड कर सकता हूँ जहाँ परमात्मा ने
मेरी सहायता की। [6]कुछ लोग सोच सकते हैं कि इस बारे में घमंड करना
ठीक होगा, लेकिन मैं इसके बारे में घमंड नहीं करना चाहता। मैं नहीं
चाहता कि लोग जो मुझे देखते और सुनते हैं, उससे ज्यादा मुझे कुछ
समझें, [7]भले ही मैंने उन अद्भुत पवित्र दर्शनों को देखा है।

कहीं मैं घमंड से फूल न जाऊँ, इसलिए परमात्मा ने शैतान को मेरे शरीर
में दर्द भेजने से नहीं रोका। इस दर्द से मुझे बहुत कष्ट होता है। जैसा कि
मैंने कहा, इस दर्द का उद्देश्य है कि मैं खुद को दूसरों से बेहतर न समझूँ।
[8]मैंने तीन बार प्रभु येशु से इससे छुटकारा पाने के लिए गुहार लगाई,
[9]पर उनका जवाब था, “तुम्हारे लिए मेरी कृपा काफी है, क्योंकि
मेरी शक्ति कमजोरी में ही सिद्ध होती है।” तो मैं पौलुस अब अपनी
कमज़ोरियों पर गर्व करूँगा कि मुक्तिदाता की शक्ति मुझ में वास
करे। [10]मुक्तिदाता की खातिर, मैं कमज़ोरी, बेइज्ज़ती, सताव, दुखों
और परेशानियों में भी खुश रहता हूँ, क्योंकि मेरी कमजोरियाँ ही मुझे
बलवान बनाती हैं।

पौलुस का सत्संगियों के प्रति प्रेम

[11]मैं खुद को बेवकूफ बना रहा हूँ, लेकिन तुमने मुझे ऐसा करने के
लिए मजबूर किया! तुम्हें मेरी तरफ से बोलना चाहिए था। हो सकता है

---

* **12:2** *परमस्वर्ग* - या, “तीसरे स्वर्ग”

मेरी हैसियत कुछ भी न हो, लेकिन मैं उन बड़े राजदूतों से भी कम नहीं
हूँ। [12]जब मैं तुम्हारे साथ था, तो मैंने सबर रखा और प्रभु येशु के एक
सच्चे राजदूत के सभी शक्तिशाली चमत्कार, अद्भुत निशानियाँ और
चमत्कारी काम दिखाता रहा। [13]तुम केवल एक आशीर्वाद से चूक गए
जो अन्य सत्संगों को मिल गया। जब मैं अन्य सत्संगों में जाता हूँ तो
उन्हें ही मेरे खर्चे का बोझ उठाने का अवसर मिलता है। मुझे दुख है
कि तुमने अपने सत्संग के लिए उस अवसर का लाभ नहीं उठाया!

[14]देखो, मैं तीसरी बार तुम्हारे पास आने के लिए तैयार हूँ, और
मेरे लिए यह महत्व नहीं रखता कि तुम मेरा खर्चा उठाओ। मुझे
तुम्हारा दिल चाहिए, तुम्हारा पैसा नहीं। आखिरकार, छोटे बच्चे अपने
माता-पिता को खर्चा नहीं देते हैं, लेकिन माता-पिता अपने छोटे बच्चों
का खर्चा उठाते हैं। तुम मेरे लिए मेरे छोटे बच्चों की तरह हो, [15]तो मैं
तुम्हारे जीवन के लिए खुशी से अपने आप को और अपना सबकुछ
खर्च कर दूँगा। हालांकि ऐसा लगता है कि जितना अधिक प्यार मैं
तुमसे करता हूँ, उतना ही कम प्यार तुम मुझसे करते हो।

[16]तुम में से कुछ लोग मानते हैं कि मैं तुम पर बोझ नहीं था। लेकिन
कुछ को अभी भी लगता है कि मैं चालाक हूँ और तुम से छल करता
था। [17]तुम्हीं बताओ, क्या वास्तव में उन व्यक्तियों को तुम्हारे पास
भेजकर मैंने तुम्हारा गलत फायदा उठाया है? [18]तुम्हारे पास जाने के
लिए मैंने भाई तीतुस से विनती की और उसके साथ एक भाई को
भेजा। क्या तीतुस ने तुमसे कुछ लाभ उठाया? नहीं! क्योंकि हम में
एक ही आत्मा है, और हम एक दूसरे के कदमों के निशान पर चलते
हैं, और उसी के अनुसार काम करते हैं।

[19]तुम बहुत समय से सोच रहे होगे कि अब तक हम तुम्हारे सामने
अपना बचाव कर रहे हैं। नहीं, हम तुमको यह मुक्तिदाता के भक्तों
के रूप में, और परमात्मा को हमारा गवाह जानकर बताते हैं। प्यारे
दोस्तो, हम जो कुछ भी करते हैं, वह तुमको मजबूत करने के लिए
करते हैं। [20]मुझे यह डर है कि मेरे वहाँ आने पर मैं तुम्हें अपनी उम्मीद
के अनुसार न पाऊँ और तुम भी मुझे अपनी उम्मीद के अनुसार न
पाओ। मुझे डर है कि तुम में से कुछ बहस कर रहे होगे या ईर्ष्या या
क्रोधित या स्वार्थी या गपशप कर रहे होगे या एक दूसरे का अपमान

कर रहे होगे। मुझे तो यह भी डर है कि कहीं तुम घमंडी और बागी
न हो जाओ। [21]मुझे डर है कि जब मैं फिर से तुम्हारे पास आऊँगा
तो तुम्हारी असलियत दिखाकर मेरे परमात्मा मुझे शर्मिंदा न कर दें।
मेरा रोने का मन करेगा क्योंकि तुम में से बहुतों ने अपने बुरे कर्मों से
पश्चाताप नहीं किया है। तुम अभी भी ऐसे काम कर रहे जो अपवित्र,
वासना से भरे और कामुक हैं।

13

चेतावनी

[1]अब मैं तीसरी बार तुम्हारे यहाँ आ रहा हूँ। परमात्मा-ग्रंथ में लिखा
है “किसी भी आरोप को साबित करने के लिए दो या तीन गवाहों का
होना ज़रूरी है।” [2]जब मैं दूसरी बार तुम्हारे यहाँ आया था, तो मैंने सब
लोगों को, विशेषकर उन्हें जिन्होंने पाप किया था, चेतावनी दी थी।
और अब मैं तुम्हारे साथ वहाँ मौजूद नहीं हूँ वहाँ आने से पहले से ही
चेतावनी देता हूँ कि पापी सज़ा से बच नहीं पाएगा। [3]तुम इस बात का
प्रमाण चाहते हो कि मुक्तिदाता मेरे द्वारा बोलते हैं? जब मुक्तिदाता
तुम्हारी गलतियों में सुधार लायेंगे, तो वह कमजोर नहीं हैं। वह
शक्तिशाली होंगे! [4]हालाँकि वह कमज़ोर थे जब उन्हें क्रूस पर चढ़ा
दिया गया था, वह अब जीवित हैं क्योंकि परमात्मा की शक्ति उनमें
है। हम कमजोर हैं, जैसे मुक्तिदाता थे। जब हम तुम्हारे साथ होंगे तो
तुम देखोगे कि हम भी परमात्मा की शक्ति से हर काम करेंगे, जैसा कि
मुक्तिदाता ने किया है।

[5]अपने को परखकर देखो कि तुम में प्रभु येशु के प्रति आस्था है या
नहीं। यदि तुम जाँच में खरे उतरते हो, तो यह साफ हो जाएगा कि
मुक्तिदाता येशु तुम में वास करते हैं। लेकिन अगर तुम जाँच में खरे
नहीं उतरते हो, तो मुक्तिदाता येशु तुममें वास नहीं करते हैं। [6]और
मुझे आशा है कि तुम मानते हो कि हम आस्था की कसौटी पर खरे
उतरे हैं। [7]हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि तुम बुरे कर्म करना बंद
कर दो। हम इस तरह से प्रार्थना नहीं करते हैं कि हम खुद को अच्छा

13:1 उपदेश 19:15

दिखाएँ, परंतु सही काम करने में तुम्हारी मदद करते हैं, भले ही दूसरे
सोचते हों कि हम कसौटी पर खरे नहीं उतरें हैं। [8]हम सत्य का विरोध
नहीं कर सकते, परन्तु हमेशा सत्य के पक्ष में खड़े रहना चाहिए।
[9]हमें कमजोर दिखने में खुशी होती है अगर इससे यह दिखाने में मदद
मिलती है कि तुम मजबूत हो। हम प्रार्थना करते हैं कि परमात्मा तुमको
ऐसी शक्ति दें जिससे तुम्हारी आस्था में कोई कमी न हो। [10]मेरे आने
से पहले मैंने ये बातें इसलिए लिखी हैं कि जब आऊँ तो मुझे सख्ती
से अपने अधिकार का इस्तेमाल न करना पड़े। क्योंकि मैं परमात्मा से
प्राप्त अधिकार का इस्तेमाल तुम्हें मजबूत करने के लिए करना चाहता
हूँ, न कि तुम्हें नुकसान पहुँचाने के लिए।

[11]भक्त भाइयो और बहनो, अब मैं इन शब्दों के साथ पत्र समाप्त
करता हूँ। खुश रहो, परमात्मा के सिद्ध मार्ग को अपना लक्ष्य बनाओ,
एक दूसरे को मज़बूत बनाओ, एक मत हो और शांति से रहो, तब प्रेम
और शांति देने वाले परमात्मा तुम्हारे साथ होंगे। [12]एक दूसरे को प्रेम से
भरा नमस्कार करो। [13]यहाँ के सारे पवित्र भक्त अपना नमस्कार भेजते
हैं।

[14]मुक्तिदाता प्रभु येशु की कृपा, परमात्मा का प्रेम और पवित्र आत्मा
की संगति तुम सबके साथ हो।